ऊँ सिद्ध स्त्रोत श्री बाबा बालक नाथ जी

जय सिद्ध योगी जय नाथ हरि, मेरी बार क्यो देर इतनी करी।
उंचा है पर्वत गिरनार का, था हुआ जन्म जहां सरकार का।
पिता वैष्णव और मां लक्ष्मी, आ गोदी में खेले जिनके हरि।
लगी बचपन में ही सच्ची लगन, लिया नाम प्रभु का ओर हुए मगन।
माया पांच तत्व की झूठी लगी, प्रीती प्रभु से जा सच्ची करी।
किनी तपस्या जा कैलाश पे, चमके ज्यों चन्दा आकाश पे।
प्रेम मे लीन हो भक्ति करी, शंकर भोले की तार हिली।
दिया शिव शंकर न वर आपको, दिया योग किया अमर जात को।
जाना न भूल यह हमारी कही, जा कलियुग में होगी महिमा बडी।
काटे थे संकट आ मात के, हँसते थे माता की हर बात पे।
बनके रत्नों के पाली हरि, पूरे बारह साल की नौकरी।
चर्चा जो फैला तेरे नूर का, गया हिल दिल फिर हर हूर का।
कानो में जब तेरी शोभा पडी, संगी बना तेरा आ भृर्तहरि।
खेतो में खेले अजब खेल जो, लोगो ने कहा बुरा मात को।
सुन कर न रत्ती भी देरी करी, खेतो में खेती आ कीनी हरी।
दिखा दी माता को भी रोटियां, और लस्सी की भरी वही लोटियां।
देखी जो रत्नो ने शक्ति खरी, देख के वह भी दंग रह गई।
सुना जब गोरख तेरे नाम को, वह आया परखने तेरे काम को।
दूध की आके जो मांग करी, औसर के दूध से चिप्पी भरी।
चाहा फिर गोरख के चेला करू, डांलू कान मुन्दर ओर आगे चलूं ।
रही सब गोरख की सेना खडी, उड़े नाथ बन तब पौना हरि।
बिराजे गुफा में है जग जानता, बह्मा और विष्णु भी है मानता।
जगमग-जगमग ज्योति जगी, ऋषियों ने मिलकर स्तुति करी।
सिद्ध हो योगी हो नाथ हो, भक्तों के प्यारे सदा साथ हो।
दीन दयालु हे नाथ हरि, मैने भी तुमपे है आस धरी।
सुनता हूं तेरे कई नाम है, तुम्ही ने बनाये सुबह शाम है।
है फूलो में तुमने ही रंगत भरी, है तेरे हुक्म से ही खिलती है कली।
सुन्दर सुहाना तेरा रूप है, तु अजर अमर अनुप है।

है तुम्हीं ने सारी जो सृष्टि रची, माया है तेरी यह भेद भरी।
चाँद से मुखडे पर क्या नूर है, आँख भरी मस्ती से भरपूर है।
सुन्दर सुनहरी जटा बांवरी, सोहती है सिर पर सदा सांवरी।
बगल वरागन और माला गले, झोली व चिमटा भुषण आपके।
कोमल बदन ते भभुति रमि, आकाश ऊपर और बिस्तर जमी।
बौढ़ तले धूना प्रकट किया, शेर भीआके वहां झुक गया।
नागों ने शीश पर छाया करी, वाह उमर बाली और जादूगरी।
सुरज को तुमने उजाला दिया, धरती और आकाश रोशन किया।
कहती चकोरी को यू कामिनी है, चन्दा में तूने भरी चाँदनी ।
अजब तेरी माया अजब तेरे खेल, मिट्टी का दिया है मिट्टी में तेल।
कण-कण में ज्योति है जगमग करी, कैसे कहु क्या है कुदरत तेरी।
तेरा भेद किसी ने पाया नहीं, तू हाथ किसी के भी आया नहीं।
परदें में रहकर की परवरी, लाखों की तुमने है झोली भरी।
दीन दयालु हे दीना नाथ, आया हूँ में भी अब तेरे द्वार।
है तुम्हीं को मेरी भी लाज हरि, करो पार आके यह नैया मेरी।
गिरते को थाम लो ऐ मेरे नाथ, छोडा है दुनियां ने अब मेरा साथ।
बेडी है मेरी भंवर में गिरी, चाहूँ मै तेरी हरि रहवरी।
माना कि मै इक गुनाहगार हूं पर माफी का हरदम हकदार हूं।
बक्शो मुझे अब ऐ नाथ जी, सुन लो पुकार यह दर्द भरी।
मै दीन हूं, दूखिया हूं, अन्जान हूं, मै भूला हूं, भटका हूं, नादान हूं।
मिटा दो तुम्ही नाथ हस्ती मेरी, मुझ से जो मेरी खुदी न मरी।
चोरों ने ऐसा है पीछा किया, चैन से अब तक न जीने दिया।
कोई बात मेरी छुपी न रही, मैने ही इनसे जा की मुखबिरी।
ढूंढा तुझे तू कहीं न मिला, यह दुई का पर्दा तू अब दे हटा।
है यही एक आखिरी ख्वाहिश मेरी, नजर भर के देखुं तै नूरी तेरी।
बता दो तुम्ही, अब कहा जांऊ मै, छुटा जो मुझसे, कहां पांऊ मै।
मै बन्दा हूं तेरा, करूं बंन्दगी, कटती नहीं यूँ , काटे जिन्दगी।
मै जीऊ तो जीऊ तेरे नाम से, मै पीऊ तो पीऊ तेरे जाम से।
उतरे ना मेरी यह मस्ती कभी, पिला दो मुझे, बस हरि नाम की।

फिर जीने या मरने की, क्या बात है, मिट जाए हस्ती, अमर जात है,
करता रहूं मै, इबादत तेरी, बन जाये बस ये आदत मेरी।
न मर कर जीऊ, न जी कर मरू, न कर्मो के चक्कर में, जा कर पड़ूं,
यही एक बिनती है मेरी, हरि जोत में जोत मिले दास की।
मै तेरे स्त्रौत का पाठ करूं, चरण कमल चित, नाथ धरुं,
देना मुझे भी हरि सन्मति, सोचूं न बदी, कभी किसी की।
जो इस स्त्रोत का पाठ करे, वह सूरज की नांई आगे बढे,
बसे घर में उसके, आ लक्ष्मी, दुख दरिद्रता, हो दूर सभी।
सुने सुनाये जो, इस पाठ को, सहायी भी उसका, सदा नाथ हो,
महिमा है भारी, मेरे नाथ की है दुनिया भी सारी, तभी मानती।
कृपा जब कीनी, मेरे नाथ ने, बोला स्त्रोत यह, तब दास ने,
त्रुटि के लिए, है क्षमा मांगता यह दास, हरि आपका।
जय सिद्ध योगी, जय नाथ हरि, मेरी बार क्यो, देर इतनी करी।

..... जय बाबे दी .....

सत् करतार

सत् करतार तूं ही तू,धन गुरू बेअन्त है तू।
आकाश भी तूं, पाताल भी तूं। दूर भी तूं ते नाल भी तू।
दुःखु विच तूं ते सुख विच तूं। नफे विच तूं, ते टोटे विच तू।
गर्मी विच तूं, ते सर्दी विच तू। हानी विच तू, ते नेकी विच तू।
सत् करतार तूं ही तूं।।

देंदा वी तूं, ते लैंदा वी तूं।। मारें वी तूं, ते रक्खे वी तूं।
डोबें वी तूं, ते तारे वी तूं।। चन्द वी तूं, ते सूरज वी तूं।
पवन विंच तूं, ते पानी विच तूं।। अन्न विच तू, ते बसन्तर विच तू।
पीर वीं तूं ते पैगम्बर वी तूं।। बाहर वी तूं ते अन्दर वी तू।
झुग्गी विच तूं, ते मन्दिर विच तूं।। देवी विच तू, ते देवता विच तू।
बाली वी तूं, ते माड़ा वी तूं।। कपट वी तूं, ते धीरज वी तूं।
जिद्धर देखां तू ही तूं, जिद्धर झांका तूं ही तूं।
ताणे पेटे इक्को रूं, जे मन मनजाए तां वी तूं।
सत् करतार तूं ही तूं, धन गुरू बेअन्त है तू।